ἡδύς = स्वादु q. v.; εἵλη per metath. e ἕλιη; fortasse goth. *sauil* sol, Them. *sauila*, per metath. e *svalia*. Vid. सूर्, स्वर्.)

सूष् 1. P. (प्रसवे, ut videtur, ex 1. सू adjecto ष्) generare. *Cf.* असूष्.

1. **सृ** 1. P. ire, incedere, progredi. Mah. 1.1696.: स राजा मृगयां यातः ... ससार. *C. acc.* adire, aggredi. N. 17.35.: दमयन्तीम् अथो सृत्वा. Fluere. Rigv. 32.12.: अवासृजः सर्तवे सप्त सिन्धून् «emittebas ad dimanandum septem fluvios»; Rigv. V. 101.4.: त्रेधा ससुर् आपः. (Vid. सल्, सलिल, सरित्, सरस् et cf. ऋ, स्रु, सृप्, gr. ἅρ-μα, sicut lat. *currus* a *currendo*, v. चर्.)

c. अनु sequi. Mah. 3. 11556.: पन्थानम् ... अनुससुः. *Caus.* sequi, persequi. Mah. 1.4309.: दस्यवः ... अनुसार्यमाणा बहुभी रथिभिः.

c. अप abire. Hit. 18.18.: दूरम् अपसर. *Caus.* facere ut quis abeat, amovere. Man. 7.149.

c. अभि adire, advenire, accedere. N. 11.26. Sa. 5.62. Dr. 6.10. *Caus. id.* Mr. 130.5.: भवन्तम् अभिसारयितुम् आगता; Mah. 1.1221.

c. उद् *Caus.* facere ut quis proveniat, exeat. Mah. 3. 14872.: उत्सारयत तान्.

c. उद् praef. प्र *Caus.* concedere, dare. Hit. 74.21.: प्रोत्सारितार्धासनः.

c. उप adire, aggredi, accedere. Mah. 2.2596. Coire *cum viro.* Mah. 3.8587.: इच्छामि त्वां स्रग्विनम् ... उपसर्तुम्.

c. निस् egredi, provenire. N. 20.30. Su. 3.25.26. *Caus.* facere ut quis exeat. Mah. 3.12995. Expellere, abigere. Hit. 65.19. 83.7.

c. निस् praef. वि egredi. In. 1.26. N. 20.31.

c. परि circumire, circumfluere. Mah. 3.10983.: आपः परिसस्रुः.

c. प्र procedere, prodire. R. Schl. II. 59.10. Bh. 15.4. — प्रसृत modestus. R. Schl. I. 12.2. — *Caus.* protendere, extendere. Hit. 10.18.: हस्तम् प्रसार्य; 85.7.: पक्षौ प्रसार्य. — पण्यानि प्रसारयितुम् res venales exponere. R. Schl. II. 48.3.: वणिजो न प्रसारयन् नचा 'शोभन्त पण्यानि; Man. 5.129.

c. प्र praef. वि dimanare, diffundi. Ragh. 16.3.: तेषाम् ... भिन्नो ऽष्टधा विप्रससार वंशः (schol. विस्तृतः).

c. वि *Caus.* protendere. R. Schl. I. 42.6.

c. सम् ire, adire. Man. 12.70. — *Caus.* facere ut quis eat, movere. Man. 12.124.

2. **सृ** 3. P. सिसर्मि *i. q.* 1. सृ.

सृज् 6. P. *interdum* A. 1) dimittere, emittere, effundere. R. Schl. I. 44.38.: गङ्गाम् ... श्रोत्राभ्याम् असृजत्; Rigv. 38.8.: वृष्टिर् असर्जि. *Cum vocibus, quae missilia significant,* mittere, emittere, conjicere, jaculari. Mah. 3. 16461.: असृजत् सायकान्; Ragh. 11.44. (vid. मुच्). 2) deponere, ponere, imponere (e manibus emittere). N. 5.28.: स्कन्धदेशे ऽसृजत् तस्य स्रजम्. 3) creare, producere, *e se emittere.* Man. 1.25.: सृष्टिं ससर्ज चै 'वे 'मां स्रष्टुम् इच्छन् इमाः प्रजाः; Su. 3.11.: सृज्यताम् प्रार्थनीयै 'का प्रमदा; 14.: ताम् ... असृजत्; Mah. 1. 4165.: सृजेथास् त्रीन् लोकान् अन्यान्; Bh. 4.7. 4) gignere, generare. R. Schl. I. 16.6.: किन्नरीणाञ्च गात्रेषु ... सृजध्वं हरिरूपेण पुत्रान्; 16.9.: सुतान् वीरान् ससृजुः. (Cf. वृज्. Huc traxerim lat. *rigo*, goth. *rig-n* pluvia, nisi pertinent ad वृष्; v. praeff. अभि, अव, आ.)

c. अति 1) relinquere, reliquum facere. Mah. 4.331.: भीमसेनो ऽपि मांसानि ... अतिसृष्टानि मत्स्येन (nom. pr.) विक्रीणीते युधिष्ठिरे. 2) dare. R. Schl. II. 18.23.: अतिसृज्य ददानी 'ति वरम् मम (vid. sl. 22. et cf. त्याग actio dandi a त्यज् relinquere; v. etiam praef. अभि.

c. अप praef. वि demittere, dejicere, abjicere. Mah. 3. 16104.: वासः ... वानराणां यत् सीता ह्रियमाणा व्यपासृजत् (cf. sl. 16053.).

c. अभि 1) effundere. Rigv. 19.9. 2) dare. R. Schl. I. 9. 63.: तेना 'भिसृष्टा ब्रह्मर्षे ग्रामा स्व् इते.

c. अव 1) dimittere, emittere, effundere. Rigv. 32.12.: अवासृजः सर्तवे सप्त सिन्धून् (v. सृ). 2) projicere.